सहरिया जनजाति के विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

नितिन कुमार सतभैया

शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार और समाज कार्य अध्ययन शाला जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर

डॉ शालिनी पांडेय

प्राचार्या, उदय एजुकेशनल कॉलेज भिंड मध्य प्रदेश

शोध सार

मध्य प्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त ग्वालियर जिले के प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में से तीन तहसीलों जो कि सहरिया जनजाति बाहुल्य हैं अर्थात घाटीगाँव, डबरा एवं भीतरवार तहसील के 20 प्राथमिक विद्यालयों और 20 माध्यमिक विद्यालयों को **उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि** से प्रतिदर्श के रूप में चयनित कर कुल 600 प्रतिदर्श में दोनों, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के क्रमशः 150 बालक विद्यार्थी और 150 बालिका विद्यार्थी लिए गए। प्रतिदर्श के चयन के पश्चात उनकी शैक्षिक उपलब्धि के लिए पिछली कक्षा के वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंकों का संग्रहण किया गया और पारिवारिक वातावरण की जाँच हेतु चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों से **रीना शर्मा** एवं **विभा निगम** द्वारा निर्मित **गृह वातावरण मापनी** को भरवाया गया। शोध अध्ययन में आँकड़ों का संग्रहण करने के पश्चात् शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस शोध अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक रूप से किया गया। मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण आधुनिकतम सांख्यिकीय विश्लेषण प्रणाली **SPSS** (वर्जन २०) द्वारा वन **वे एनोवा टेस्ट** विश्लेषण विधि के

माध्यम से किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण पर यह पाया गया कि कुल मिलाकर सहरिया जनजाति के सभी विद्यार्थिओं की शैक्षणिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में थी। उपसमूहों के अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों तथा बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की भी शैक्षणिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में थी। इसी प्रकार सहरिया जनजाति के सभी विद्यार्थिओं, प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों तथा बालक एवं बालिका विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण औसत स्तर का है।

प्रस्तावना

डेविड ओ. मैकेयू के अनुसार एक बच्चे का चरित्र उसके जीवन के पहले बारह वर्षों के दौरान काफी हद तक बनता है। वह घर में स्कूल की तुलना में 16 गुना अधिक समय बिताता है। प्रत्येक बच्चे का व्यक्तित्व व चरित्र काफी हद तक उसके घर के वातावरण के निरंतर प्रभाव और माता–पिता के सावधानीपूर्वक या उपेक्षापूर्ण प्रशिक्षण के कारण निर्मित होता है। बच्चे के लिए आत्म–नियंत्रण सीखने और आज्ञाकारिता विकसित करने के लिए घर सबसे अच्छी जगह है, जिसकी जरुरत बाद में समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में होती है। वर्तमान समय में जहाँ मनुष्य ने भौतिक उन्नति के चरम की ओर बढ़ा है, दूसरी ओर उसके पारिवारिक एवं पारस्परिक सम्बन्धों, सामंजस्य एवं वातावरण में कमी आयी है। जिसका सीधा प्रभाव बच्चों के विकास एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसका एक मुख्य कारण माता – पिता दोनों का पेशेवर होना तथा सोशल साइट्स और डिजिटल मीडिया के साथ अत्यधिक संलग्न होना है।

शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा का परिणाम है; यह प्रदर्शित करता है कि किस हद तक छात्र, शिक्षक या संस्था ने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है।शैक्षणिक उपलब्धि का मापन सामान्यतः परीक्षा या निरंतर मूल्यांकन द्वारा मापा जाता है। छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं जैसे कि घर, विद्यालय और साथियों के साथ उन्मुखीकरण। परन्तु इस सभी में गृह या पारिवारिक वातावरण सबसे सबसे प्रमुख कारक है (परवीन, 2007; कोडजो, 2007; मुओला, 2010) । व्यक्ति का घर वह पहला संस्थान है जहाँ पर वह चीजों को सीखना शुरू करता है, और माँ ही बच्चे की पहली शिक्षिका होती है, जबकि साथियों की भूमिका परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा निभाई जाती है। "घर का वातावरण या पारिवारिक वातावरण" एक अमूर्त अवधारणा नहीं है। यह भौतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का संयोजन है। भौतिक वातावरण के अंतर्गत बुनियादी सुविधायें जैसे कि कमरे, पानी, आश्रय, कपड़े, भोजन और अन्य भौतिक जरूरतों की सामग्री आती हैं। जबकि घर का मनोवैज्ञानिक वातावरण परिवार के सदस्यों की आपसी बातचीत, सम्मान, घर के मुद्दों पर निर्णय लेने में सहभागिता इत्यादि शामिल है। पारिवारिक वातावरण के इन दोनों पक्षों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों के समग्र विकास पर पड़ता है। पारिवारिक वातावरण को प्रभावित करने वाले कुछ प्रभावशाली कारक परिवार की प्रकृति, अधिकारिक व्यक्ति (प्रमुख), माता–पिता की शैक्षिक स्थिति, माता–पिता का बच्चों और परिवार की वित्तीय स्थिति के प्रति रवैया इत्यादि हैं। सकारात्मक घरेलू वातावरण में गर्मजोशी, प्रोत्साहन और शत्रुता की अनुपस्थिति प्रमुख तत्व हैं। पारिवारिक वातावरण किशोरों की आशाओं और महत्वाकांक्षाओं को प्रभावित करता है। बच्चों की सामाजिक परवरिश घर (परिवार) से शुरू होती है। घर एवं परिवार ही बच्चों को समाज, संस्कृति, धर्म या सामाजिक वर्ग के साथ उनकी पहचान कराता है। पारिवारिक वातावरण का प्रभाव घर तक ही सीमित नहीं रहता वरन विद्यालय में विद्यार्थी के जीवन और अकादमिक प्रदर्शन को भी प्रभावित करता है। बच्चों में विश्वास, दृष्टिकोण और

कौशल विकसित कर सक्षम बनाने में पारिवारिक वातावरण सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कारक है जो उन्हें समाज में सकारात्मक रूप से सीखने और उस सीख़ को जीवन में संलग्न करने में मदद करता है। अच्छा और सकारात्मक पारिवारिक वातावरण सीखने का माहौल, प्यार, सुरक्षा, अनुकरण, प्रोत्साहन का अवसर प्रदान करता है जो बच्चों को फलने–फूलने में मदद करता है। माता–पिता–बच्चे के रिश्ते बच्चों की दीर्घकालिक गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए मौलिक कारक है। अतः यदि व्यक्ति के समग्र विकास को प्राप्त करना है तो सबसे पहले उसके पारिवारिक वातावरण को सकारात्मक और सहज बनाना होगा।

अध्ययन की रूपरेखा

प्रतिदर्शन विधि

इस शोध में प्रतिदर्श चयन के लिए **असंभाव्य प्रतिदर्शन** में **उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि** का चयन प्रतिदर्श चयन के लिए किया गया है।

उपकरण का परिचय :–

इस शोध में आकड़ों के संग्रह के लिए मानकीकृत परीक्षण गृह वातावरण मापनी का उपयोग किया गया है। वर्तमान में यह गृह वातावरण मापने के लिय अत्यंत प्रासंगिक मापनी है। नाम – गृह वातावरण मापनी निर्माता – रीना शर्मा

परिणामों का विश्लेषण और व्याख्या

सहरिया विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की वर्णनात्मक सांख्यिकी

चर	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि					
		माध्य	माध्यिका	बहुलांक	मानक विचलन	विषमता	ककुदता
कुल विद्यार्थी	600	66.83	67.00	70.00	9.62	.277	—.655
प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी	300	66.56	66.00	70.00	9.81	.296	—.737
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	300	67.10	67.00	70.00	9.43	.264	—.552
प्राथमिक स्तर के बालक	150	66.12	66.00	70.00	9.88	.339	—.555
प्राथमिक स्तर की बालिकायें	150	66.99	67.00	61.00	9.76	.259	—.901
माध्यमिक स्तर के बालक	150	67.26	67.50	55.00	10.34	.295	—.690
माध्यमिक स्तर की बालिकायें	150	66.94	67.00	67.00	8.46	.172	—.545

प्रतिदर्श के शैक्षिक उपलब्धि का वर्णनात्मक सांख्यिकी को प्रदर्शित किया गया है। वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत सम्पूर्ण प्रतिदर्श के साथ साथ शैक्षिक स्तर (प्राथमिक एवं माध्यमिक) तथा लिंग (बालक एवं बालिका) के आधार पर माध्य, माध्यिका, बहुलांक, मानक विचलन, विषमता, एवं ककुदता का विवरण दिया गया है।

प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 66.83 तथा मानक विचलन 9.62 है जो कि दर्शाता है कि कुल मिलाकर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में है। साथ ही साथ शैक्षिक स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के माध्य के विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है, कि प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में है। लिंग के

आधार पर माध्य के आँकड़ों के विश्लेषण से प्रदर्शित होता है कि प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि भी प्रथम श्रेणी में है।

प्रस्तुत आँकड़ों के माध्यिका के विश्लेषण में पाया गया कि संपूर्ण प्रतिदर्श **(N = 600)** की **माध्यिका** का मान **67** है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि **50%** विद्यार्थियों के प्राप्तांक **67** से अधिक एवं **50%** विद्यार्थियों के प्राप्तांक **67** से कम हैं। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की माध्यिका का मान **66** है। इससे यह पता चलता है कि **50%** प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राप्तांक **66** से अधिक एवं **50%** विद्यार्थियों के प्राप्तांक **66** से कम हैं। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की माध्यिका का मान **67** है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि **50%** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राप्तांक **67** से अधिक एवं **50%** विद्यार्थियों के प्राप्तांक **67** से कम हैं।

बहुलांक के आँकड़ों के विश्लेषण से यह देखा जा सकता है कि सम्पूर्ण प्रतिदर्श, प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तथा प्राथमिक स्तर के बालकों का **बहुलांक 70** है। वही पर प्राथमिक स्तर की बालिकाओं, माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं का बहुलांक क्रमशः **61, 55** एवं **67** है।

विषमता के आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि संपूर्ण प्रतिदर्श, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों और साथ ही साथ प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के आँकड़ें थोड़ा दाईं छोर की ओर हैं, हालांकि यह लगभग सममित है क्योंकि विषमता का मान 0.5 और –0.5 के बीच है।

ककुदता के आँकड़ों के विश्लेषण से संकेत मिलता है कि आँकड़े तुंगककुदी वक्र के आकार में हैं क्योंकि कुल आँकड़ों, शैक्षिक स्तर तथा लिंग के आधार पर आँकड़ों के कुकदता का मान .263 से कम हैं।

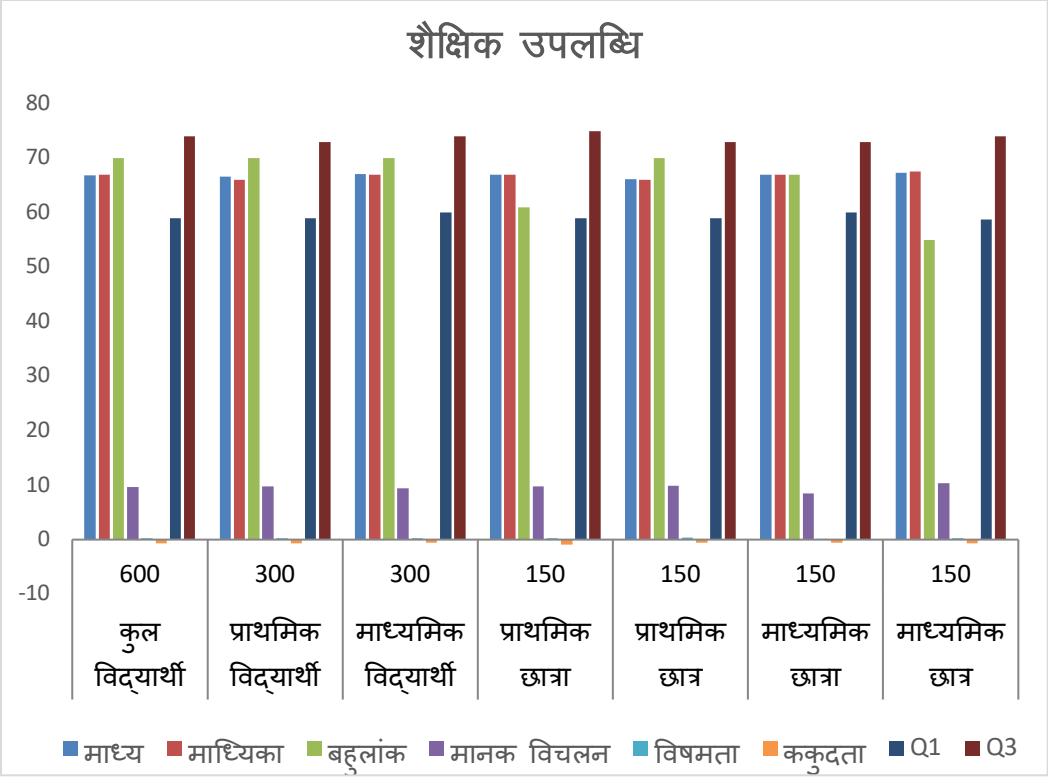

निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण पर यह पाया गया कि कुल मिलाकर सहरिया जनजाति के सभी विद्यार्थिओं की शैक्षणिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में थी। उपसमूहों के अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों तथा बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की भी शैक्षणिक उपलब्धि प्रथम श्रेणी में थी। इसी प्रकार सहरिया जनजाति के सभी विद्यार्थिओं, प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के कुल विद्यार्थियों तथा बालक एवं बालिका विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण औसत स्तर का है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ***पाण्डेय, रामशकल (2015),*** *"शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार" अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।*
2. ***डॉ0 एस0 सौन्दर्य एवं राजशेखर 2015,*** *" चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" रिसर्च स्टडी टीचर ऐजूकेशन इन्स्टीटूशन इन इण्डिया, वॉल्यूम 2, सी0ए0एस0ई0।*
3. ***कपिंगा, (2014),*** *तंजानिया के माध्यमिक विद्यालय में अभिभावकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, तंजानिया।*
4. ***सोनाल, ज्योत्सना (अप्रैल2014),*** *''भारतीय जनजातिय समूहों के शैक्षिक विकास में असमानतायें उत्तराखण्ड के जनजातीय समूहों का केस अध्ययन'' परिपेक्ष्य, न्यूपा पृष्ठ 39–60!*
5. ***सिंह, अमरवीर एवं सिंह, जयपाल (2014)*** *''अभिभावकों के पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।*
6. ***पाण्डा, बी.के (2013–14),*** *''अनुसूचित जनजातियों के बच्चों के बीच शिक्षाः राजस्थान के दो गाँवों का सघन अध्ययन'' वार्षिक रिपोर्ट, न्यूपा पृष्ठ संख्या 69!*
7. ***यादव शरद कुमार (अगस्त 2013),*** *''भारत में जनजातीय समुदाय के लिए शिक्षा और विकाश की नीतियाँ'' परिपेक्ष्य, न्यूपा, पृष्ठ 1–20!*
8. ***पटनायक, बी.के. (2013)*** *सोशिल चेंज जर्नल ऑफ द काउंसिल फॉर सोशियल डवलपमेंट, पेज 53–78, वाल्यूम–4!*

Contributors Details:

नितिन कुमार सतभैया

शोधार्थी

आजीवन शिक्षा प्रसार और समाज कार्य अध्ययन शाला

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर

डॉ शालिनी पांडेय

प्राचार्या उदय एजुकेशनल कॉलेज भिंड मध्य प्रदेश